मोहन राकेश की कहानियों में स्त्री–पुरुष संबंध

गजेन्द्र कुमार

मोहन राकेश का साहित्य परम्परा का साहित्य नहीं है, वह वर्जनाओं का साहित्य भी नहीं हैं। इसी कारण मोहन राकेश ने अपनी कहानियों को भी इनसे मुक्त रखा है। मोहन राकेश विद्रोह के लिए ही विद्रोह नहीं करते। वह वास्तव में उस पूरी व्यवस्था को बदलना चाहते हैं, जो विद्रोह का दिखावा तो करती है पर सही अर्थ में बदलती नहीं है। मोहन राकेश की कहानियों में एकरसता नहीं है, स्त्री–पुरुष संबंधों को लेकर लिखी कहानियों में भी विविधता है। इनकी कहानियाँ उबाती नहीं है, जीवन में रोचकता का संचार करती है, इतना ही नहीं आज के पारिभाषित जीवन–मूल्यों पर प्रश्न–चिन्ह लगाती हैं।